IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

"उच्च माध्यमिक स्तर के किषोर विद्यार्थियों की व्यक्तिगत समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन"

निर्देशिका

डॉ. मिनाक्षी शर्मा

(असिस्टेंट प्रोफेसर)

बियानी गर्ल्स बी.एड. कॉलेज, जयपुर

प्रस्तुतकर्त्री

सुमन कुमारी शर्मा

(एम एड छात्रा)

सारांश –

दार्शनिक तथा वैज्ञानिकों के जीवन व्यापार के अनेक प्रकार से व्याख्या की है। भारतीय दार्शनिक विचारधारा के अनुसार शरीर के रथ और जीवात्मा को रथ का यात्री माना गया है। मन इस रथ का सारथी है जो इच्छाओं के डोर से रथ को हांकता है। पाश्चात्य दर्शन में शास्त्र के आधार पर मन देह में स्थित उस तत्व को कहते है, जो ज्ञान प्राप्त करता हैं, इच्छा करता हैं और जिससे प्रेम, घृणा आदि रागात्मक वृत्तिया उत्पन्न होती है। इसी के द्वारा समस्त शारीरिक व मानसिक कार्य सम्पादित होते है।

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्त्री द्वारा सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है और आंकड़ों के संग्रहण हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया है। न्यादर्श के रूप में जयपुर जिले के किशोर छात्र व छात्राओं का 100 विद्यार्थियों का चयन किया गया है। निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि उच्च माध्यमिक स्तर के किशोर विद्यार्थियों का व्यक्तित्व समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन में सार्थक अंतर पाया जाता है।

प्रस्तावना –

इस पृथ्वी पर अगर हम नजर फैलाकर देखते हैं तो सबसे सुन्दर कृत्ति मानव की ही नजर आती है। मानव पृथ्वी का सर्वश्रेष्ठ प्राणी है और मानव का जीवन, विकास की प्रक्रिया है। प्राणी के गर्भ में आने से लेकर प्रौढ़ता करने की स्थिति मानव विकास है। प्राणी गर्भ से लेकर प्रौढ़ता तक अनवरत विकास करता रहता है।

समस्या का औचित्य –

किषोरावस्था एक नया जन्म है इस अवस्था में उच्चतर और श्रेष्ठतर मानवीय गुण प्रकट होते है। किशोरावस्था, बाल्यावस्था और प्रौढ़ावस्था के मध्य की अवस्था है इस अवस्था में बालक में अनेक प्रकार के परिवर्तन होते है जैसे – शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, सांवेगित परिवर्तन, इन होने

वाले परिवर्तनों के परिणामस्वरूप बालकों को अनेक प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता हैं अतः यह आवश्यक है कि विद्यार्थी में श्रेष्ठ गुणों के विकास के लिए उसकी समस्याओं का उचित निराकरण किया जाये।

इस प्रकार विद्यार्थी अपनी अनेक समस्याओं से उबरकर अपेन जीवन के लक्ष्यों करने में सफल हो सकेगा। वर्तमान समय में किषोरावस्था की समस्याओं का उसके जीवन के प्रत्येक भाग पर गहरा प्रभाव पड़ रहा है। इन समस्याओं के प्रभाव के अंतर्गत शिक्षा भी सम्मिलित की जा सकती है। इसके साथ ही अध्ययन में कम रूचि, विद्यालय से पलायन, अपराधिक प्रवृत्तियों की और झुकाव, कुसंगति में पड़ना आदि।

तकनीकी शब्दों का परिभाषीकरण –

1- **उच्च माध्यमिक स्तर** – उच्च माध्यमिक स्तर से तात्पर्य 9 से 12 तक शिक्षा ग्रहण करने वाले बालकों से है।

2- **किशोर** – मनुष्य का जीवन का बसंत काल माना गया है। यह काल 12 से 19 वर्ष तक रहता है।

3- **व्यक्तिगत समस्याएँ** – व्यक्तिगत समस्याएँ शारीरिक, मानसिक, सामाजिक सांवगीक से होते है।

शोध के उद्देश्य –

1. उच्च माध्यमिक स्तर के किशोर छात्र–छात्राओं की शारीरिक समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पना –

1. उच्च माध्यमिक स्तर के किशोर छात्र–छात्राओं की शारीरिक समस्याओं में सार्थक अंतर नहीं है।

शोध की विधि –

प्रस्तुत शोध अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग शोधार्थी द्वारा किया जाएगा।

जनसंख्या –

प्रस्तुत शोध अध्ययन में जयपुर शहर के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का चयन किया गया है।

शोध में प्रयुक्त न्यादर्श –

प्रस्तुत शोध अध्ययन में 100 विद्यार्थियों का चयन किया गया।

शोध में प्रयुक्त उपकरण –

प्रस्तुत शोध अध्ययन में स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है।

शोध का परीसीमांकन –

1. प्रस्तुत शोध में न्यादर्श की संख्या 100 ली गई है।
2. प्रस्तुत शोधकार्य जयपुर जिले तक सीमित रखा गया है।
3. प्रस्तुत शोधकार्य हेतु 4 विद्यालयों को चुना गया है जिनमें 2 सरकारी व 2 गैर सरकारी विद्यालय है।

4. प्रस्तुत शोध कार्य हेतु ग्रामीण व शहरी क्षेत्र को चुना गया है।
5. प्रस्तुत शोधकार्य में उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को लिया गया है।

आँकड़ों का विश्लेषण – उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की शारीरिक समस्याओं में सार्थक अंतर नहीं है।

उच्च माध्यमिक स्तर के किशोरावस्था के छात्र–छात्राओं की शारीरिक समस्याओं में सार्थक अंतर नहीं है।

सारणी–1

क.स.	शहरी क्षेत्र	N	M	S.D	t	सार्थकता स्तर
1	किशोर छात्र	50	11.49	0.32	0.53	स्वीकृत
2	किशोर छात्राएँ	50	11.22	0.31		

उपर्युक्त परिणामों के अनुसार टी अनुपात का मान गणना द्वारा 0.53 प्राप्त हुआ है। टी तालिका के अनुसार डीएफ 98 पर टी का आवष्यक मान 0.15 है। चूंकि धनात्मक के आवष्यक मान से धनात्मक का गणना द्वारा प्राप्त मान अधिक है। इसलिए 0.05 सार्थकता स्तर पर परिकल्पना स्वीकृत होती है।

भावी शोध हेतु सुझाव –

1. प्रस्तुत शोध में न्यादर्श की संख्या बढ़ाई जा सकती है।
2. प्रस्तुत शोधकार्य जयपुर जिले तक सीमित रखा गया है। इसे दूसरे जिलों में भी किया जा सकता है।
3. प्रस्तुत शोधकार्य हेतु 4 विद्यालयों को चुना गया है जिनमें 2 सरकारी व 2 गैर सरकारी विद्यालय है। अतः यह शोधकार्य 4 विद्यालयों से अधिक पर भी किया जा सकता है।
4. प्रस्तुत शोधकार्य में उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को लिया गया है। इसे प्राथमिक व माध्यमिक स्तर पर भी किया जा सकता है।

शोध निष्कर्ष – शोधकर्त्री ने अपने आँकड़ों के विश्लेषण के उपरान्त यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ है कि ग्रामीण व शहरी किशोर छात्र–छात्राओं में वातावरण के अनुसार पारिवारिक परिस्थितियों के आधार पर छात्र व छात्राओं में अंतर पाया गया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची –

- अग्रवाल डॉ. संध्या, ''शिक्षा मनोविज्ञान'', विजय प्रकाशन मंदिर, वाराणसी संस्करण 2005
- आहुजा राम, ''सामाजिक अनुसंधान'', रावत पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2007
- बेस्ट जॉन डब्ल्यू, ''रिसर्च इन एज्यूकेशन'', दिल्ली प्रिंटिंग्स हॉल प्रा. लि. 1963
- भटनागर ए बी मीनाक्षी अनुराग, ''शिक्षण अधिगम का मनोविज्ञान'', आर लाल बुक डिपो।
- भगनागर आर पी एवं अन्य, ''शिक्षा अनुसंधान'', इंटरनेशनल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ
- कपिल एच के, ''सांख्यिकी के मूल तत्व'', एच पी.
- Shodhganga.inflibnet.ac.in
- http://ijassonline.in